Date – 21 September 2022

राजेंद्र चोल और उनकी पेंडत्ती

राजेंद्र चोल और उनकी पेंडत्ती

संदर्भ- हाल ही में डॉ. कलाईकोवन ने चोल राजा राजेन्द्र चोल के समय निर्मित मंदिर के एक शिलालेख में उत्कीर्ण पेंडत्ती शब्द की व्याख्या की है, जिसमें मंदिर राजेंद्र चोल की पेंडत्ती द्वारा बनाए जाने की बात की है।

राजेंद्र चोल– परांतक प्रथम ने महान चोल साम्राज्य की नींव रखी लेकिन चोल साम्राज्य को उसकी शीर्ष स्थिति में राजराज और राजेंद्र पहुँचाया। राजेंद्र ने अपने पिता राजराज के शासन में 1012 ई. से सहायता करना प्रारंभ कर दिया था। राजेंद्र प्रथम ने 1014 ईं से 1044 ईं तक शासन किया। 1025 ई. में गंगईकोंडचोलपुरम को राजधानी बनाया, लगभग 250 वर्षों तक यह चोल साम्राज्य की राजधानी बनी रही।

उसने अपने शासन में साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई और निम्न क्षेत्रों को जीत लिया-

- रायचूर दोआब
- चालुक्यों के मान्यखेत
- दक्षिणी श्रीलंका
- गंगा के उत्तर में युद्ध कर गंगईकोंड की उपाधि ग्रहण की।
- राजेंद्र चोल ने राज्य की नौसेना को सुदृढ़ कर जावा, सुमात्रा, इंडोनेशिया, बर्मा, वियतनाम, थाईलैण्ड, सिंगापुर मलेशिया तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। साम्राज्य विस्तार के साथ चोल वंश के शासकों ने स्थापत्यकला में विशेष ध्यान दिया।

चोलों द्वारा बनाए गए मंदिर- चोलों के इतिहास को जानने के लिए चोल मंदिरों को जानना अधिक आवश्यक हो जाता है क्योंकि चोलकालीन मंदिरों में चोलों के समाज और संस्कृति का बारीकी से वर्णन किया गया है।

- **तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर-** यह चोल साम्राज्य का प्रसिद्ध मंदिर है, दक्षिण मेरु के अभिलेख में उल्लेख है कि इस मंदिर का निर्माण राजराज प्रथम द्वारा 1003-1004 में और इसका लोकार्पण 1009-1010 ई. में किया गया
- **गंगईकोण्डचोलपुरम का वृहदेश्वर मंदिर-** इसकी स्थापना राजेंद्र प्रथम द्वारा भगवान शिव के लिए की गई थी। इस मंदिर में अद्भुत मूर्तिकला की मौजूदगी है। किले की दीवारों से मंदिर पूरी तरह से सुरक्षित किया गया था। वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इसे संरक्षित किया गया है।
- **गंगईकोंडचोलीश्वरम-** राजेंद्र प्रथम द्वारा बनवाया गया यह मंदिर 1035 ईं में पूर्ण हुआ। इसका 53 मीटर का समानकोणीय विमान दर्शनीय है।
- **दारासुरम का एरावतेश्वर मंदिर-** यह मंदिर एरावतेश्वरम मंदिर के रूप में शिव को समर्पित है। कहा जाता है कि यह मंदिर नित्य विनोद व सतत मनोरंजन को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इसके साथ ही मुख्य देवता की पत्नी पेरिया नायकी अम्मन का मंदिर इसके उत्तर में स्थित है। इस मंदिर में चोलों के ऐतिहासिक ज्ञान युक्त अभिलेख प्राप्त होते हैं जैसे- चोल तृतीय द्वारा मंदिर के नवीनीकरण का, बरामदे से शिव संतों के जीवन की घटनाओं के चित्र और चोलों व चालुक्यों के संघर्ष का ज्ञान यहां के अभिलेखों से होता है।यह मंदिर चोल राजा राजराज द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। इसके अग्रभाग वाला मंडप जिसे अभिलेखों में राजगंभीरन तिरूमंडपम कहा गया है। इसे पहियों वाले एक रथ के रूप में बनाया गया है। यह मंदिर मूर्तिकला व चित्रों से सुसज्जित है, जो नायनारों के साथ कई ऐतिहासिक घटनाओं की साक्ष्य हैं।
- **गुगनाथेश्वर मंदिर-** मंदिर से प्राप्त शिलालेख के अनुसार मंदिर को राजेंद्र प्रथम की पेंडत्ती जिसका नाम चोलकुलावल्ली था, द्वारा अनुदान प्राप्त हुआ था। डॉ कलाईकोवन के अनुसार आज पेंडती का अर्थ पत्नी हो सकता है लेकिन उन दिनों इसका अर्थ शिलालेखों में दासी या सहायक के रूप में किया गया था।

गुगनाथेश्वर मंदिर।

चोल समाज में महिलाओं की स्थिति-

- विदेशी यात्री सूलेमान के अनुसार चोल साम्राज्य में सती प्रथा का प्रचलन था।
- मंदिरों में विशुद्ध देवदासी प्रथा का प्रचलन था।
- उच्च वर्ग में बहु विवाह प्रचलित थे।
- डॉ. कलाईकोवन के शोध कार्य के अनुसार पेंडत्ती या दासी द्वारा मंदिर को अनुदान दिया गया। अतः दास प्रथा का प्रचलन था किंतु उनकी स्थिति अच्छी थी।

संरक्षण एवं प्रबंधन-

- चोल कालीन तीन मंदिरों तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम का वृहदेश्वर मंदिर और दारासुरम के ऐरावतेश्वर मंदिर **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण** के संरक्षण में है,
- 1959 से इन्हें तमिलनाडु हिंदू और धर्मस्व वृत्ति अधिनियमन के अधीन लाया गया है।
- तंजौर के बृहदेश्वर मंदिर और दारासुरम के एरावतेश्वर मंदिर के मामले में, ये संस्थाएं किसी भी विरोधाभाषी मुद्दे को अंतिम रूप देने से पहले राजभवन देवस्थानम के वंशानुगत ट्रस्टी से परामर्श करती हैं, जिसमें ट्रस्टी के विचार लेना आवश्यक हो।

गुंजन जोशी

रिडिस्कवर हम्पी : विजयनगर की आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक समृद्धि

रिडिस्कवर हम्पी : विजयनगर की आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक समृद्धि।

संदर्भ- हाल ही में बीकानेर हाउस में हुई एक फोटो प्रदर्शनी में मनोज अरोड़ा ने अपना पहला एकल शो **रिडिस्कवर हम्पी** नाम से हुआ। इसमें उन्होंने हम्पी के खण्डरों के विभिन्न पहलुओं को दिखाया।

हम्पी- हम्पी, आंध्र प्रदेश की सीमा के पास कर्नाटक के पूर्वी क्षेत्र में तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित है।हम्पी को पम्पा, हम्पे, भास्कर क्षेत्र, किष्किंधा क्षेत्र भी कहा जाता है। यह मध्यकालीन हिंदू साम्राज्य विजयनगर की राजधानी थी। यहां स्थित खंडहर समृद्धशाली सभ्यता के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। विजयनगर के समृद्ध राजाओं ने 14वी से 16वी शताब्दी में हम्पी में उत्कृष्ट मंदिर व महलों का निर्माण करवाया।1565 में बहमनी साम्राज्य द्वारा विजयनगर की पराजय के बाद यह शहर विरान हो गया। भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित 418724 हेक्टेयर क्षेत्र में यह नगर **यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल** के रूप मे 1986 में शामिल किया गया है। वर्तमान में यहाँ व्यापक अवशेषों के साथ जीवंत मंदिर हैं।

हम्पी के मंदिरों की वास्तुकला- विजयनगर साम्राज्य में द्रविड़ वास्तुकला का विकास हुआ,

- इसके विशाल आयामों और क्लोइस्टेड बाड़ों से सजाया गया।
- छोटे मंदिरों में केवल एक मंदिर और एक बरामदा होता है।
- मध्यम आकार के मंदिरों में गर्भगृह, मंडप व एक रंगमंडप होता है।
- बड़े मंदिरों में चोल शैली में निर्मित एक लंबा राय गोपुरम होता है।
- गोपुरम में कई मानव आकृतियाँ बनाई जाती थी।
- मंडप अलंकृत स्तंभों द्वारा समर्थित हैं।
- स्तंभों से घिरे प्रवेश द्वारों पर ऊंचे टावरों से यह शैली विशिष्टता को प्राप्त करती है।
- बड़े मंदिरों में देवी के लिए अलग मंदिर बनाया जाता था। जैसे हजारा, बालकृष्ण और विट्ठल मंदिर।

विरुपाक्ष मंदिर-

- हम्पी की सबसे पुरानी इमारतों में से एक विरुपाक्ष मंदिर है, यह मंदिर का निर्माण 1442 में हुआ था।

- मंदिर का निर्माण विजयनगर की **रानी लोकमहादेवी** द्वारा किया गया था। वे विक्रमादित्य द्वितीय की पत्नी थी।
- भगवान शिव की मूर्ति के साथ इसमें भुवनेश्वरी व पंपा की मूर्तियाँ भी स्थापित हैं।

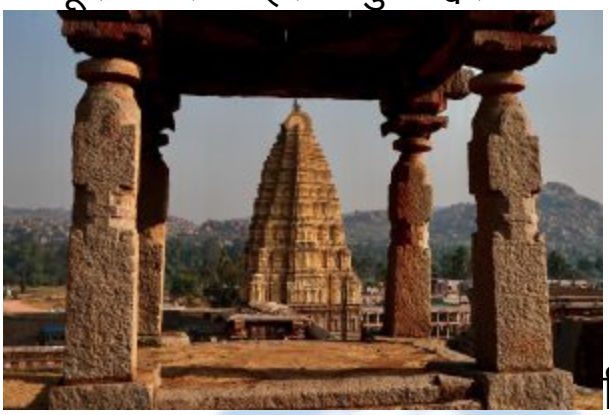
विरुपाक्ष मंदिर।

विट्ठल मंदिर –

- विट्ठल मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है।
- इसका निर्माण **राजा देवराय द्वितीय** के शासन काल में हुआ था।
- इसमें कल्याण मंडप और उत्सव मंडप जैसे तीन प्रवेश द्वार, गोपुरम के साथ छिद्रित बाड़े के भीतर जुड़े हुए भवन हैं।
- कुओं व जल चैनलों के साथ एक पुष्करणी(टंकी)।
- यह हम्पी की सबसे अलंकृत व आकर्षित करने वाली संरचना है।
- रंग मंडप व 56 संगीतमय स्तंभ, जिन्हें थपथपाने से संगीत सुनाई देता है।
- मंदिर के परिवेश में स्थित पत्थर का रथ विशेष आकर्षण का केंद्र है। यह रथ पत्थरों के पहियों की मदद से स्थानांतरित भी किया जा सकता है।

विट्ठल मंदिर में रथ।

कमल महल परिसर-

- कमल महल भारतीय इस्लामी शैली के लिए जाना जाता है।

- इसके मेहराब कमल के फूल की तरह बनी है इसलिए इसे कमल महल कहा जाता है।
- प्राचीनकाल में यह महल महारानियों के ग्रीष्मकालीन महल के रूप में कार्य करता था।

कमल महल।

कृष्ण मंदिर-

- यह मंदिर भगवान कृष्ण के बाल रूप को समर्पित मंदिर था।
- यह मंदिर, विजयनगर के राजा कृष्णदेवराय ने 1513 में बनवाया था।

गुंजन जोशी

कश्मीर और मार्तंड मंदिर का प्रारंभिक इतिहास

कश्मीर और मार्तंड मंदिर का प्रारंभिक इतिहास

संदर्भ- हाल ही में कुछ तीर्थयात्रियों ने भारतीय सर्वेक्षण संस्थान मार्तण्ड मंदिर में पूजा अर्चना की। इसके तुरंत बाद जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल ने नवग्रह पूजा में भाग लिया।

कश्मीर का इतिहास-

- कश्मीर के इतिहास के लिए कल्हण की राजतरंगिणी को ही एकमात्र प्रमाणिक व प्रथम स्रोत माना जाता है।
- **दुर्लभ वर्धन** को कश्मीर के कारकोट राजवंश का संस्थापक माना जाता है। चीनी तीर्थयात्री, हुआनत्सांग ने कश्मीर का दौरा किया और 631 ईस्वी से 633 ईस्वी तक तीन साल बिताए। उन्होंने कश्मीर और उसके लोगों, बौद्ध मठों, बुद्ध के अवशेषों वाले

अशोक के स्तूपों का एक विस्तृत विवरण दिया है। चीनी इतिहास के अनुसार, उनके क्षेत्र कश्मीर से आगे बढ़े और सिक्के जारी करने वाले कश्मीर के पहले राजा थे।

- **ललितादित्य मुक्तापीड़ –** कार्कोट राजवेश के सबसे प्रतिष्ठित शासक ललितादित्य मुक्तापीड़ थे।
- ललितादित्य ने परिहासपुरा में अपनी राजधानी स्थापित की थी।
- ललितादित्य ने कम्बोज, तुर्क, खस, दरद,तिब्बतियो को पराजित कर एकछत्र शासन किया। इनके काल में कश्मीर का शासनकाल बंगाल व मध्य एशिया तक पहुँच गया था।
- साम्राज्य विस्तार के साथ ललितादित्य ने कला को विशेष संरक्षण प्रदान किया।
- धार्मिक दृष्टि से उदार होने के कारण उसने हिंदू व बौद्ध मंदिर बनवाए। इसमें कश्मीर का मार्तण्ड मंदिर सुप्रसिद्ध है।

मार्तण्ड मंदिर का इतिहास-

- मार्तण्ड मंदिर कश्मीर के दक्षिणी भाग में अनंतनाग से पहलगाम मार्ग पर स्थित है।
- मार्तण्ड मंदिर का निर्माण कश्मीर के कार्कोट राजवंश के ललितादित्य ने अपने शासनकाल (725-753ई.) में करवाया था।
- मार्तण्ड मंदिर सूर्य को समर्पित मंदिर है। मार्तण्ड का संस्कृत पर्याय सूर्य भी होता है।
- कुछ विद्वानों के अनुसार यह मंदिर प्राचीनकाल से मौजूद था और ललितादित्य ने इसे भव्य रूप दिया।

मंदिर का विनाश-

- 15वी शताब्दी की शुरुआत में सिकंदर बुतशिकन के शासन के दौरान हिंदुओं को जबरन इस्लाम ग्रहण करने के लिए मजबूर किया गया और कहा जाता है कि मार्तण्ड मंदिर समेत सभी मंदिरों को नष्ट कर दिया गया था।

- भूकंप, चिनाई में दोष और मौसम की अधिकता भी मंदिर के विनाश के कारण माने जाते हैं।

मार्तण्ड मंदिर की स्थापत्यकला

- मंदिर कश्मीरी शैली पर निर्मित है। जिसमें ग्रीक रोमन, बौद्ध गांधार,उत्तर भारतीय शैली का कुछ प्रभाव है।
- एक चतुष्कोणीय प्रांगण के केंद्र में स्थित मंदिर, उत्तर और दक्षिण की ओर दो संरचनाओं से मिलकर बनी है।
- मंदिर के स्थापत्य को तीन भागों में बांटा जा सकता है- मंडप, गर्भगृह और अंतराल।
- मंदिर 63 फीट की ऊँचाई के कारण भव्य था।
- मंदिर में उत्कृष्ट नक्काशी युक्त पत्थरों का प्रयोग किया गया है।
- मंदिर से प्राप्त मूर्तियों की शैली गुप्तकाल की मूर्तिकला से मिलती जुलती है।
- मंदिर की दीवारों में चूने के मोर्टार का प्रयोग कर ग्रे चूना पत्थर के विशाल ब्लॉक का प्रयोग किया गया है।

गुंजन जोशी

YOJNA IAS